विद्याभवन, बालिका विद्यापीठ,लक्खीसराय.

रूपम कुमारी , वर्ग-दशम् , विषय-हिन्दी 🌷.

दिनांक- २४/६/२०

|| अध्ययन -सामग्री . ||

बच्चों , कल की कक्षा में आपने अट नहीं रही है कविता के कुछ अंश की व्याख्या एवं कविता के मूल भाव से अवगत हुए । शेष काव्यांश की व्याख्या प्रस्तुत है --.

कहीं सांस लेते हो ,
घर- घर भर देते हो
उड़ने को नभ में तुम
पर -पर कर देते हो

व्याख्या: जब फागुन का महीना आता है चारों तरफ वसंती सौंदर्य इस कदर बिखर जाता है कि हर घर में फूलों का सौंदर्य और उसकी मोहकता पसर जाती है । चारो तरफ सौंदर्य पसरा होता है । सिर्फ मनुष्य ही नहीं -पक्षी भी फागुन की सुंदरता से इतने मोहित हो जाते हैं कि वसंत – दर्शन के लिए नभ में अपनी उड़ान भरते लगते हैं ,और तब उनकी संख्या तादाद में होने से आसमान में सिर्फ पर ही पर (पंख ही पंख) दिखाई देने से उसकी सुंदरता में चार चाँद लग जाता है और दृश्य मनोहारी हो उठता है ।

दी गई सामग्री को ध्यानपूर्वक पढ़ें ।

फिर कल मिलेंगे.....